मातृभाषा

संपादन

प्रो. संतोष पाण्डेय

प्रकाशक

अखिल भारतीय राष्ट्रीय शैक्षिक महासंघ

शैक्षिक महासंघ सदन, 606/13,

कृष्णा गली नं.9, मौजपुर, दिल्ली-110053

दूरभाष एवं फेक्स-011-22914799

मातृभाषा

© सर्वाधिकार प्रकाशकाधीन

❖ प्रकाशन दिवस :
विजयदशमी, 17 अक्टूबर 2010
आश्विन शुक्ल दशमी, विक्रम संवत् 2067

❖ सहयोग राशि : 50 रुपये

❖ अक्षर संयोजन :
सागर कम्प्यूटर्स, जयपुर

❖ मुद्रक : **प्रीमियर प्रिन्टिग प्रेस, जयपुर**

❖ प्रकाशक :
अखिल भारतीय राष्ट्रीय शैक्षिक महासंघ

मातृभाषा

अनुक्रम

5.	प्राक्कथन	- प्रो. संतोष पाण्डेय
6.	देश की सभी भाषाएँ राष्ट्रीय	- प.पू. श्रीगुरूजी
11.	Mother Tongue Medium a Fitness Exercise?	- H V Sheshadri
17.	मातृभाषा की प्रभावशीलता	- डॉ. भगवती प्रकाश शर्मा
22.	प्राथमिक शिक्षा मातृभाषा में ही हो	- *प्रो. संतोष पाण्डेय*
25.	मातृभाषा एवं मूल्यों का विकास	- प्रो. मोहन लाल छीपा
31.	Mother Tongue is the Best Expression ...	- P. Yugandhar Reddy
34.	Language is also a carrier of culture	- Dr. TS Girish Kumar
39.	अनिवार्यत: मातृभाषा में ही हो प्राथमिक शिक्षा	- विष्णुप्रसाद चतुर्वेदी
43.	Language of Learning	- Ajit Kumar Biswas
44.	शिक्षा का माध्यम मातृभाषा हो	- संजीवनी रायकर
47.	स्कूल के चार देवता	- हनुमान सिंह राठौड़
53.	वर्तमान भारत में मातृभाषा में शिक्षण की स्थिति	- जयभगवान गोयल
58.	Flourish and Develop Mother Tongue	- Samiran Roy
61.	A Continuing Battle	- K. Ramasamy
66.	Oral Tradition- The Indian Education	- K. Ramrathinam
68.	प्राथमिक शिक्षा और मातृभाषा	- गोविन्द प्रसाद शर्मा
73.	Place of English in India	- N.S. Raghunath
74.	एकता का सूत्र : मातृभाषा	- टी. सुब्बाराव
79.	What the Medium of Instruction Ruckus Betrays	- Sankalan
82.	मातृभाषा से सहज व स्वाभाविक विकास	- बजरंग प्रसाद मजेजी
84.	मातृभाषा में ही बालक का सर्वांगीण विकास	- बजरंगी सिंह
86.	Medium of Instruction	- Shri Krishna Murti

88.	Mahatma Gandhi on Mother Tongue	- Dr. Jyotsna Kamat
90.	What should be the language for study?	- H. Nagbhushana Rao
94.	Mother Tongue-Best for Learning	- Vinoba Gautam
96.	The first learning is best in mother tongue	- Swaminathan
99.	International Mother Tongue Day	S Anklesaria Aiyar
105.	Self Identify : Mother Tongue	- Sankalan
108.	प्रस्ताव- प्राथमिक शिक्षा का माध्यम मातृभाषा ही हो	- P Chandrasakharan
110.	Medium : A scientific Analysis	- C.V. Srinatha Sastry
113.	Are we heading in a right direction	- Vipul J Somani
117.	गर्भ में ही सीख लेते हैं भाषा	- संकलन
118.	Future and Intelligence of our country	- C.V. Srinatha Sastry
122.	मातृभाषा में शिक्षण सरल व रुचिकर	- डॉ. श्रीमती सरिता रानी
125.	मातृभाषा में प्राथमिक शिक्षा बच्चे के हित में	- भाषा विज्ञानी से संवाद

प्राक्कथन

शिक्षा के अधिकार के कानूनी रूप लेने के साथ ही, शिक्षा के माध्यम का प्रश्न पुनः महत्वपूर्ण बन गया है। देश में मध्यम, उच्च मध्यम वर्ग तथा उच्च संभ्रात वर्ग द्वारा आंग्ल भाषा को व्यक्तित्व विकास हेतु आवश्यक मानने की निरन्तर बलवती हो रही धारणा के संदर्भ में प्राथमिक स्तर की शिक्षा मातृभाषा में देने का प्रश्न तात्कालिक रूप से विचारणीय व महत्वपूर्ण हो जाता है। विश्वभर में यह स्वीकार किया गया है कि बच्चों के गुणों व क्षमताओं का अधिकतम विकास मातृभाषा में शिक्षा प्रदान करने से ही संभव हो सकता है। यूनेस्को ने भी इसके महत्व पर मुहर लगाते हुये प्रतिवर्ष 21 फरवरी को मातृभाषा शिक्षण दिवस के रूप में मनाने का आग्रह किया हुआ है।

जन्म लेने के पश्चात व बच्चे का प्रथम व प्राकृतिक परिचय माँ से होता है, माँ के हाव-भाव के संकेतों व भाषा के माध्यम से ही उसके सामाजीकरण की प्रक्रिया प्रारंभ होती है। शनैः शनैः परिवार के अन्य सदस्यों के माध्यम से वह घर व बाहर के परिवेश से परिचित होता है। परिवार के संस्कार, परंपराओं व समग्र बाह्य परिवेश से परिचय के उपरांत उसके चेतन व अचेतन मस्तिष्क का तादात्म इन सबसे स्थापित होने के कारण वह उस परिवार व समाज में बोली जाने वाली भाषा का वाहक बन जाता है। ऐसे में यदि प्रारंभिक शिक्षा मातृभाषा में दी जाये तो उसके अन्दर छिपी प्रतिभा व क्षमताओं का प्रकटीकरण स्वाभाविक रूप से होने लगता है। मानव की स्वभावगत इस प्रवृत्ति के बावजूद अनेकानेक कारणों से भारत में मातृभाषा के स्थान पर आंग्ल भाषा में शिक्षण का चलन बढ़ा है। कुछ माननीय न्यायालयों ने भी व्यक्तिगत स्वतंत्रता के आधार पर शिक्षण के माध्यम की स्वतंत्रता प्रदान की है। बच्चे राष्ट्र की सम्पत्ति है, उसके ट्रस्टी के रूप में सम्पूर्ण समाज का दायित्व बनता है कि उनको प्रतिभा व क्षमताओं के पूर्ण विकास के स्वाभाविक अवसर प्रदान करें।

आज के भौतिकवादी व आर्थिक उपलब्धियों को ही जीवन का आदर्श स्वीकारने वालों की मिथ्याधारणा के चलते, बच्चों का स्वाभाविक विकास बाधित हो रहा है। आज की सफलता के मानदण्ड की दृष्टि से आंग्लभाषा का विशद ज्ञान अधिकारिता अपेक्षित हो सकती है, परन्तु सभी कुछ आँग्ल भाषा के माध्यम से ही सीखा जाय, आवश्यक नहीं है। प्रारंभिक शिक्षा के उपरांत ज्ञान किसी भी भाषा में लिया जा सकता है। परन्तु यह किसी वर्ग या समाज की श्रेष्ठता का परिचायक नहीं हो सकता है। इसी महती आवश्यकता को स्वीकारते हुये यह आवश्यक है कि प्रारंभिक शिक्षा देने में मातृभाषा के प्रयोग को प्रेरित किया जाय। इसी उद्देश्य को दृष्टिगत कर इस पुस्तक के माध्यम से मातृभाषा व बच्चे के स्वाभाविक मानसिक विकास, उसमें निहित प्रतिभा व क्षमताओं से संबंधित महत्त्वपूर्ण पहलुओं को विद्वतजनों ने अपने-अपने लेखों द्वारा रेखांकित किया है। समाज में इनके व्यापक प्रचार-प्रसार हेतु यह प्रकाशन पाठकों की सेवामें प्रस्तुत है। देश व समाज के उत्थान व विकास को प्रेरित करने वाले इस प्रयोग में सभी सहयोगी होंगे तथा प्रबल जन-मत का निर्माण मातृभाषा में शिक्षण के रूप में प्रकट हो, यही इस प्रकाशन की सफलता होगी।

-प्रो. संतोष पाण्डेय

देश की सभी भाषाएँ राष्ट्रीय

❑ प.पू. श्रीगुरूजी

सन् 1962 में तमिल संस्कृति के महान समर्थक तथा मदुरै से प्रकाशित होनेवाले दैनिक समाचार-पत्र के संपादक श्री कारिमुत्तु त्यागराज चेटियर ने श्री गुरूजी को चाय के लिए निमंत्रित किया था। हिंदी को राष्ट्रभाषा बनाने के प्रश्न को लेकर उन दिनों (सन् 1962) दक्षिण भारत में बड़ा विवाद उठ खड़ा हुआ था। उन्होंने बड़े साहस के साथ श्री गुरूजी से पूछा - हमारे देश के लिए हिंदी को ही राष्ट्रभाषा बनाने की क्या आवश्यकता है? प्रश्न कर उत्तर के लिए वे बड़ी उत्सुकतापूर्ण दृष्टि से गुरूजी की ओर देखने लगे।

श्री गुरूजी ने कहा- *क्यों? मेरे विचार से देश की सभी भाषाएँ, जिन्होंने हमारी संस्कृति के महान विचारों को प्रस्तुत किया है, शत-प्रतिशत राष्ट्रीय है। हमारे देश की राष्ट्रभाषा केवल हिंदी ही नहीं है। अत: तमिल भी राष्ट्रभाषाओं में से एक है। लेकिन मुख्य बात यह है कि इतने बड़े देश के लिए एक सामान्य व्यवहार की भाषा की आवश्यकता है, जो आजकल प्रचलित विदेशी भाषा (अंग्रेजी) का स्थान ले सके। क्या आप इस आवश्यकता का अनुभव नहीं करते?*

श्री गुरूजी के उत्तर से पूर्णतया समाधान पाकर श्री चेटियर ने साधुवाद द्वारा मुक्तकंठ से उसकी यथार्थता स्वीकार की।

मैं समझता हूँ आप संपूर्ण देश के लिए हिंदी के पक्ष में हैं?

- मैं किस बात के पक्ष में हूँ अथवा किस बात के पक्ष में नहीं, यह महत्वपूर्ण नहीं है। प्राचीनकाल से अपने लोग, टूटी-फूटी हिन्दी में अपने विचारों को व्यक्त करते हुए तीर्थयात्राएँ करते आ रहे हैं। काशी में, प्रयाग में हम देखते हैं कि संपूर्ण देश से आने वाले लोग टूटी-फूटी हिन्दी में अपना काम चलाते हैं। हिन्दी में कामकाज चलाने का हमने निर्णय लिया, उसके बहुत पूर्व ही सीमित प्रमाण में हिन्दी चलती रही। मेरा जन्म मराठीभाषी परिवार में हुआ, किन्तु मैंने हिन्दी सीखी और 12 वर्ष की आयु में तुलसी रामायण पढ़ी। गुजरात, पंजाब, बंगाल, असम आदि प्रदेशों में लोग हिन्दी समझते हैं। दक्षिण के लोग यदि तमिल स्वीकार करें और चाहें कि वह अखिल भारतीय भाषा बने, तो मैं उसका समर्थन करूँगा।

अब प्रत्येक देश अपनी क्षेत्रीय भाषा लागू कर रहा है। अत: अखिल भारतीय संपर्क में

कठिनाई है। समान भाषा के अभाव में हम काम कैसे चला सकते हैं?

– समान शब्दों के दृष्टिकोण से तो संस्कृत ही आदर्श होगी। हम किसी भी भाषा के शत्रु नहीं। वस्तुतः तकनीकी विषयों के लिए जर्मन और रूसी भाषा पढ़ी जाने लगी। अंग्रेजी का प्रसार तो द्वितीय महायुद्ध के बाद अमरीकी प्रभाव के विस्तार के परिणामस्वरूप हुआ। द्वितीय भाषा के रूप में हम किसी भी उपयोगी भाषा को स्वीकार कर सकते हैं।

कुछ प्रदेश हिन्दी से सहमत न हों, तो विकल्प क्या है?

– अपने प्रदेश लड़ रहे हैं, इसलिए क्या हम यह कह सकते हैं कि अंग्रजी राज उसका विकल्प है? नहीं, नहीं। अब स्थिति की दयनीयता यह है कि अंग्रेजी प्रमुख भाषा बन बैठी है और हमारी सब भाषाएँ गौण बनी हैं। इसे बदलना होगा। यदि हम समझते हैं कि हम स्वतंत्र राष्ट्र हैं, तो हमें अंग्रेजी के स्थान पर स्वभाषा लानी होगी। निस्संदेह हम किसी पर हिन्दी थोपना नहीं चाहते। ऐसा दृष्टिकोण रखना ठीक नहीं होगा, क्योंकि वे सब हमारे अपने लोग हैं।

संस्कृत भाषा सर्वोत्तम है। परन्तु इस संबंध में एक कठिनाई है। हाल ही में संस्कृत भाषा के एक विद्वान से मैंने प्रश्न किया कि संस्कृत भाषा होते हुए भी हमारे देशवासियों ने प्राकृत और हिन्दी में बोलचाल प्रारंभ क्यों की? कालिदास-रचित नाटकों में भी छोटे पात्र प्राकृत बोलते हुए ही बताए गए हैं। कारण यह है कि उन दिनों में भी संस्कृत कठिन भाषा समझी जाती थी और वे कोई सरल माध्यम खोज रहे थे। इसलिए प्राकृत आई। काशी के एक पंडित ने प्राकृत से भी सरल संस्कृत का व्याकरण बनाया है। संस्कृत यदि सरल की जा सके, तो प्रयुक्त हो सकती है।

अपने देश में अंग्रेजी का क्या भविष्य है?

– अंग्रेजी को इस देश से जाना होगा। इसके दो प्रमुख कारण हैं। प्रथमतः अंग्रेजों के शासन में शासकों की भाषा सीखने के प्रति स्वाभाविक प्रवृत्ति थी। अब अंग्रेजों के जाने के साथ यह उत्साह खत्म हो रहा है। दूसरे अंग्रेजों के

मैं मानता हूँ कि अपनी सभी भाषाएँ राष्ट्रीय हैं। वे हमारी राष्ट्रीय धरोहर हैं। हिन्दी भी उन्हीं में से एक है, परन्तु उसके बोलने वालों की संख्या अधिक होने से उसे राजभाषा के रूप में स्वीकार किया गया है। जो देश अंग्रेजों की दासता से मुक्त हुए, उन सभी देशों ने अपने देश की भाषाओं को ग्रहण किया। ब्रह्मदेश ने ब्रह्मी और श्रीलंका ने सिंहली को स्वीकार किया। सत्ता हाथों में आते ही उन्होंने भाषा बदल दी। दक्षिण अफ्रीका में विभिन्न जातियों की 14-16 भाषाएँ हैं तथा प्रत्येक समुदाय को अपनी भाषा पर गर्व है। फिर भी सर्वसम्मति से उन्होंने 'स्वाहिली' भाषा को राष्ट्रीय भाषा के रूप में ग्रहण किया। उनका सब-कुछ ठीक चल रहा है।

शासन में स्थिति यह थी कि अंग्रेजी के ज्ञान के बगैर शासकीय सेवाओं में प्रवेश असंभव था। अंग्रेजी के ज्ञान के अभाव में विद्वत्ता का कोई मूल्य नहीं था। आर्थिक दृष्टि से ही नहीं, तो सामाजिक जीवन में भी कोई प्रतिष्ठा नहीं थी। यह भय भी अब क्रमशः घटता जा रहा है। अंग्रेजी भाषा अंग्रेजी शासन का एक अंग था। अब किसी भी प्रकार की कृत्रिमता उसे जीवित नहीं रख सकती।

भाषा समस्या का हल क्या है?

– मेरा स्पष्ट मत है कि उच्च शिक्षा और शोधकार्य के लिए एक सर्वसाधारण भाषा हो। संस्कृतोद्भव सर्वसाधारण तांत्रिक शब्दावली से इस दिशा में पहल की जाए। संस्कृत का शब्द-भंडार समृद्ध है और उसके बारे में एक पवित्र भावना भी है, इसलिए मेरे विचार से वह राष्ट्रभाषा का स्थान ले सकती है। कामचलाऊ संस्कृत की जानकारी प्राप्त करना बहुत ही सरल है। किसी एक समान भाषा के अभाव में विभिन्न प्रांतों के मध्य कोई बौद्धिक विचार-विनिमय संभव नहीं होगा और वे एक-दूसरे के निकट नहीं आ पाएँगे। राष्ट्र की एकता के लिए संस्कृत नितांत आवश्यक है।

हिन्दी भी इस उद्देश्य की पूर्ति कर सकती है। हिन्दी अन्य प्रादेशिक भाषाओं की तुलना में पुरानी नहीं है। कुछ क्षेत्रीय भाषाएँ तो उससे अधिक समृद्ध हैं। तमिल 2500 वर्षों से सुसंस्कृत भाषा के रूप में प्रचलित थी। इसलिए अन्य भाषाओं से हिन्दी को श्रेष्ठ कहना ठीक नहीं। मैं मानता हूँ कि अपनी सभी भाषाएँ राष्ट्रीय हैं। वे हमारी राष्ट्रीय धरोहर हैं। हिन्दी भी उन्हीं में से एक है, परन्तु उसके बोलने वालों की संख्या अधिक होने से उसे राजभाषा के रूप में स्वीकार किया गया है। यह दृष्टिकोण कि हिन्दी ही एकमात्र राष्ट्र भाषा है और अन्य भाषाएँ प्रांतीय हैं, वास्तविकता के विपरीत और गलत है।

राष्ट्रीय भाषा के विषय में आपका क्या मत है ?

– अन्य कुछ प्रश्नों की तरह ही यह प्रश्न भी अभी रुक सकता है। मुम्बई के 'टाइम्स ऑफ इंडिया' में मैंने हाल ही में पढ़ा कि स्थानीय भाषा की तुलना में अधिक संख्या में विद्यार्थी अंग्रेजी माध्यम ले रहे हैं।

यह बात केवल शहरी क्षेत्रों के लिए हो सकती है?

– किन्तु यह बात ग्रामीण क्षेत्रों में भी फैली है। अब दुर्भाग्य से भाषा को झगड़े का विषय बना दिया गया है। असम का ही मामला लें। विश्वविद्यालय ने एक प्रस्ताव पारित कर असमिया में ही शिक्षा देने का निर्णय लिया, तो वहाँ गड़बड़ी शुरू हो गई। वहाँ बंगाली लोग काफी संख्या में हैं। वे इसे अन्याय मानते हैं।

अंग्रेजी यदि राष्ट्रीय भाषा का स्थान नहीं ले सकती, तो फिर अन्य कौन-सी भाषा है, जो राष्ट्रीय भाषा का स्थान ले सके?

हाल ही में मुझसे किसी ने कहा, 'क्रिकेट हमारा राष्ट्रीय खेल है, अंग्रेजी वेश हमारा राष्ट्रीय वेश है और अंग्रेजी हमारी राष्ट्रीय भाषा है।' तब तो केवल यही कहना शेष रह जाता

है कि हमारा राष्ट्र इंग्लिश राष्ट्र है।

जो देश अंग्रेजों की दासता से मुक्त हुए, उन सभी देशों ने अपने देश की भाषाओं को ग्रहण किया। ब्रह्मदेश ने ब्रह्मी और श्रीलंका ने सिंहली को स्वीकार किया। सत्ता हाथों में आते ही उन्होंने भाषा बदल दी। दक्षिण अफ्रीका में विभिन्न जातियों की 14-16 भाषाएँ हैं तथा प्रत्येक समुदाय को अपनी भाषा पर गर्व है। फिर भी सर्वसम्मति से उन्होंने 'स्वाहिली' भाषा को राष्ट्रीय भाषा के रूप में ग्रहण किया। उनका सब-कुछ ठीक चल रहा है। विज्ञान एवं अन्य क्षेत्रों में अपने देश की तुलना में अफ्रीका काफी अधिक पिछड़ा हुआ है। हमारे यहाँ अनेक समृद्ध भाषाएँ हैं, फिर भी हमने मूर्खतापूर्ण दृष्टिकोण अपनाया है। अंग्रेजी प्रशासन और आज के प्रशासन में अपनी जनता कौन-सा अंतर देख सकती है? कोई अंतर नहीं। केवल सत्ता धारण करने वाले लोग बदल गए हैं। अभी भी अंग्रेजी प्रचलित है। तब ऐसी बात ही कौन-सी है, जो लोगों में राष्ट्रभक्ति की प्रखर भावना जगा सकें?

आप ऐसा क्यों सोचते हैं कि अंग्रेजी से हिन्दी में बदलकर देने मात्र से परिवर्तन आ जाएगा?

- यह एक प्रकार से मनोवैज्ञानिक परिवर्तन है।

प्राथमिक संस्कार घर में ही

25 जनवरी 1967 को कोल्लम (केरल) में कुछ प्रौढ़ सज्जन श्री पणिक्कर के निवास-स्थान पर श्री गुरुजी से मिलने आए थे। श्री पणिक्कर ने शिक्षण-संस्थाओं का स्तर नीचे गिरने की शिकायत करते हुए कहा, 'अब लड़कों को ईसाई शिक्षा संस्थाओं में भेजना आवश्यक हो गया है।'

श्री गुरुजी ने कहा- 'इस प्रकार की मनोवृत्ति बनाने में माता-पिता ही दोषी हैं। शिक्षण-संस्थाओं के स्तर में गिरावट आई है, यह कहने का कोई अर्थ नहीं। अपनी शिक्षा-संस्थाओं में ही लड़कों को भरती कर शिक्षा का स्तर ऊँचा उठाने के लिए उन संस्था के संचालकों को बाध्य करना चाहिए। यदि लड़कों को आप मिशनरी पाठशालाओं में भेजेंगे, तो वे मिशनरी संस्कृति को अपनाएँगे और अपनी पाठशालाओं में निम्न मध्यवर्गीय विद्यार्थी रहने के कारण उन संस्थाओं के शिक्षा स्तर में गिरावट आएगी ही।'

श्री पणिक्कर- 'परन्तु कॉन्वेंट पाठशाला में अंग्रेजी अच्छी पढ़ाते हैं। अब तो दुनिया-भर में लोग अंग्रेजी भाषा जानते हैं।'

श्री गुरुजी-'यह एक भोलेपन की भावना है। वह अंतर्राष्ट्रीय भाषा नहीं है। फ्रांस, इंग्लैण्ड के अति निकट होने पर भी वहाँ अंग्रेजी का कोई स्थान नहीं है।'

श्री अण्णाजी- 'अफ्रीका में उन्होंने एक दिन में ही अंग्रेजी को पूर्णतया हटा दिया है।'

श्री गुरुजी-'अफ्रीका ही क्यों, बर्मा (म्यांमार) और लंका में प्रारंभिक कक्षाओं में से अंग्रेजी निकाल बाहर कर दी गई है। जो लोग भारत से श्रीलंका गए हैं, उन्होंने वहाँ भाषा की समस्या निर्माण की है। अब ऐसे भारतीयों को वहाँ से बाहर निकाला जा रहा है। अपने यहाँ

कठिनाई यह है कि अंग्रेजी के नाम पर अपने लड़के भारतीय संस्कृति व जीवन-पद्धति से विमुख होकर कट जाएँगे।'

श्री पणिक्कर- 'कॉन्वेंट में जाकर वे उच्छृंखल बनते हैं।'

श्री गुरुजी- 'हाँ। लड़के घर में कुछ भी संस्कार ग्रहण करते नहीं हैं। यदि अपनी संस्कृति के अनुरूप घरों में वायुमंडल रहता, तो राष्ट्रीय वृत्ति में इतना अध:पतन नहीं होता। घर में इस प्रकार वायुमंडल न रहने के लिए मैं तो माता-पिता को ही दोष दूँगा। हमारे बचपन में वेदघोष सुनाई देता था। सुबह हम माता-पिता से उत्तमोत्तम स्तोत्र सुनते थे। ये स्तोत्र अनायास कंठस्थ हो जाते थे। आप तो जानते हैं कि श्रेष्ठ महापुरुषों के प्राथमिक संस्कार घर में ही हुए। घर में दादी माँ रहती थीं। बच्चों के लिए कौवे-चिड़ियों और पौराणिक कथाओं का भंडार उनके पास रहता था। ऐसी अनेक कथाएँ मुझे याद हैं। अपने पराक्रमी पूर्वजों के बारे में वे बताया करती थीं। आज हम बच्चों को कुछ नहीं दे पाते। माताओं को भी उसकी जानकारी नहीं है। ऐसी स्थिति में यह अपेक्षा आप कैसे कर सकेंगे कि लड़के अपनी संस्कृति से अनुप्राणित रहें?'

संस्कृति के संस्कार नई पीढ़ी में संक्रमित करने का प्रयास इंडोनेशिया में आज भी होता है। उपासना-पंथ इस्लाम रहने पर भी वे रामायण और महाभारत को भूले नहीं हैं। इन महाकाव्यों की कथा दर्शानेवाले चित्र और उन चित्रों के नीचे कथा-प्रसंग व्यक्त करने वाला छोटा वाक्य उनकी पाठ्यपुस्तकों में मैंने देखा है। इन प्रेरक कथाओं को पढ़ते-पढ़ते लड़के संस्कृति के अनुकूल रहते हुए बड़े होते हैं। वे कहते हैं कि यद्यपि वे इस्लाम मतानुयायी हैं, पर उनके यहाँ संस्कृति प्रवाह तो भारत से ही आया हुआ है। इस कारण रामायण और महाभारत को भूलना उनके लिए असंभव है। सुकर्णो यह सुकर्ण हैं। उनकी पत्नी का नाम पद्मावती है। विरोधी नेता का नाम सुहार्तो है। यह भी सुहृत् का अपभ्रंश है।

शिक्षा का अंग्रेजी माध्यम घातक

31 जनवरी 1967 की रात्रि में स्वयंसेवकों के साथ सहज वार्तालाप हो रहा था। प्राथमिक अवस्था से ही स्कूलों में अंग्रेजी माध्यम प्रारंभ करने के कॉन्वेन्ट स्कूलों के प्रयास के बारे में श्री गुरुजी बोल रहे थे। उन्होंने कहा- 'कॉन्वेंट स्कूल में विद्यार्थी अंग्रेजी में बोलें- ऐसा आग्रह रहता है। उनसे बड़े लोग जहाँ तक बन सके, घर में भी अंग्रेजी में बोलें, ऐसा वहाँ के अध्यापकों का मत है। इससे विद्यार्थी अंग्रेजी में ही सोचेगा और वह अंग्रेजी भाषा में प्रावीण्य संपादन करेगा, ऐसा तर्क दिया जाता है। प्राथमिक कक्षा में भी अंग्रेजी माध्यम इसलिए रखा जाता है। यह एक महान संकट है। आज भले ही उसका स्वरूप सूक्ष्म है। प्राथमिक कक्षा से अंग्रेजी में सोचने-बोलने वाले विद्यार्थियों के लिए उनकी रुचि के अनुकूल साहित्य निर्माण होगा जो अंग्रेजी रीतिरिवाज, रहन-सहन को बढ़ावा देने वाला रहेगा। इससे निश्चित ही विद्यार्थी अपनी सांस्कृतिक गरिमा से अछूता रहेगा। सांस्कृतिक जीवन से हमारा नाता तोड़ने का अंग्रेजों का यह सोचा-समझा प्रयास है।' ❑